Disequilibrium in Balance of Payments

एक देश के भुगतान शेष (BOP) में असन्तुलन या तो घाटा या अतिरेक हो सकता है। एक देश के BoP में घाटा या अतिरेक तब होता है जब उसकी स्वायत्त प्राप्तियाँ (Autonomous Receipts) (credit) उसके स्वायत्त भुगतान (Debit) से मेल नहीं खाती है। यदि Debit भुगतानों में credit अधिक हो तो BoP में अतिरेक होता है और असन्तुलन अनुकूल कहा जाता है। इसके ठीक उल्टा, यदि Credit से Debit भुगतान अधिक हो तो BoP में घाटा होता है और असन्तुलन प्रतिकूल कहा जाता है।

भुगतान शेष में असन्तुलन निम्न प्रकार के होते है —

1. चक्रीय असन्तुलन (Cyclical disequilibrium)
2. सुदीर्घकालिक असन्तुलन (Secular disequilibrium)
3. संरचनात्मक असन्तुलन (Structural disequilibrium)

1. Cyclical Disequilibrium

भुगतान शेष में चक्रीय असन्तुलन, चक्रीय उच्चावचन के कारण होता है। व्यापार चक्र के कारण भुगतान-शेष में निम्न प्रकार

में चक्रीय असंतुलन पैदा हो सकता है—

(i) यदि विभिन्न देशों में व्यापार चक्र के परिवर्तनों तेजी एवं मंदी की स्थिति में भिन्नता हो जाया करता है। यदि एक देश X में दूसरे देश Y की तुलना में व्यापार चक्र का प्रभाव अधिक गहन है तो X देश में तेजी की स्थिति में भुगतान शेष प्रतिकूल होगा (क्योंकि कीमतों में वृद्धि से निर्यात हतोत्साहित होंगे) एवं मंदी के समय भुगतान-शेष अनुकूल होगा (कीमतों में कमी से निर्यात प्रोत्साहित होंगे) Y देश में इसके विपरीत स्थिति बनी होगी।

(ii) यदि विभिन्न देशों में व्यापार-चक्र की विभिन्न अवस्थाओं की अवधि में भिन्नता हो तो भी भुगतान-शेष में चक्रीय असंतुलन पैदा हो सकता है। यदि दूसरे देश की तुलना में, एक देश में Recovery की अवस्था बहुत विलम्ब से आती है तो इसका दीर्घकालीन प्रभाव उस देश के भुगतान-शेष पर प्रतिकूल होता है।

(iii) यदि विभिन्न देशों में आयातों के लिए माँग की आय लोच में भिन्नता हो तो भी भुगतान-शेष में चक्रीय असंतुलन पैदा हो सकता है। यदि अन्य बातें स्थिर रहें

पर x देश में आयातों के लिए मांग की आय लोच, y की तुलना में अधिक है तो तेजी की स्थिति में x देश में भुगतान-शेष प्रतिकूल रहेगा एवं मन्दी के समय अनुकूल रहेगा।

(d) यदि विभिन्न देशों में आयातों के लिए मांग की कीमत लोच में भिन्नता हो तो तो भुगतान-शेष में चक्रीय असन्तुलन पैदा हो सकता है। यदि अन्य बातें स्थिर रहने पर, x देश आयातों के लिए मांग की कीमत लोच, y की तुलना में अधिक है तो तेजी की स्थिति में x देश में भुगतान-शेष अनुकूल होगा एवं मन्दी की स्थिति में प्रतिकूल होगा।

2. Secular Disequilibrium

एक अर्थव्यवस्था को आर्थिक विकास की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है जिनके अन्तर्गत धीरे-धीरे होने वाले दीर्घकालीन परिवर्तन होते हैं जैसे परम्परागत समाज से स्वयं-स्फूर्ति के पूर्व की अवस्था प्राप्त करने के लिए अर्थव्यवस्था में कई परिवर्तन होते हैं जो एकाएक न होकर धीरे-धीरे होते हैं। एक विकासशील अर्थव्यवस्था में, विकास की प्रारम्भिक अवस्था में

बचत की तुलना में अधिक विनियोग करना आवश्यक हो जाता है तथा निर्यातों की तुलना में आयात भी अधिक करना होता है। यदि ऐसी स्थिति देश में पर्याप्त मात्रा में विदेशी पूंजी उपलब्ध नहीं होती तो देश में भुगतान-शेष के घाटे की विकट स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसीप्रकार यदि विकास की दर की तुलना में देश में जनसंख्या की वृद्धि की दर अधिक रहती है तो भी उसकी आयात की आवश्यकताएँ निर्यात की तुलना में अधिक रहती है जिसके परिणामस्वरूप भुगतान-शेष प्रतिकूल रहता है अथवा उसमें दीर्घकालीन घाटे की स्थिति आ जाती है।

आर्थिक विकास की परिपक्वता की अवस्था (Drive to Maturity) प्राप्त कर लेने के बाद देश में विनियोग की तुलना में बचत का अनुपात बढ़ जाता है। पूंजी के आधिक्य से उत्पादन में भी वृद्धि होती है और आयातों की तुलना में निर्यात भी अधिक बढ़ने लगते है। यदि इस स्थिति में देश से पर्याप्त मात्रा में पूंजी का बहिर्गमन नहीं हो तो देश के भुगतान-शेष में दीर्घकालीन आतिरेक की स्थिति आ जाती है।